International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 588-589

भारत–अमेरिका सम्बन्ध : बदलते वैश्विक परिदृश्य के संदर्भ में

डॉ0 राकेश कुमार
रिसर्च फैलो, राजनीति विज्ञान विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत।

सारांश
वैश्वीकरण के दौर में राष्ट्रीय हित, भू–राजनैतिक अवस्थिति, जियो–साइकोलॉजी तथा विकास व शांति से संबंधित प्रासंगिक निर्णय किसी भी देश की विदेश–नीति तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। वर्तमान के वैश्विक राजनीतिक समीकरण में विश्व की दो सार्थक लोकतांत्रिक शक्तियों के मध्य न केवल राजनैतिक बल्कि आर्थिक, सांस्कृतिक, सामाजिक तथा रणनीतिक क्षेत्र में विभिन्न साझेदारियों के माध्यम से संबंध स्थापित हो रहे हैं। ये संबंध भारत और अमेरिका के मध्य सामरिक भागीदारी के साथ–साथ स्वतंत्रता के साझा मूल्यों, सार्वभौमिक मानवाधिकारों, सहिष्णुता व बहुलवाद न्याय, रचनात्मक निःशस्त्रीकरण के क्षेत्र में स्थापित हो रहे हैं। वर्तमान में भारत की बढ़ती वैश्विक शक्ति, तीव्र आर्थिक विकास तथा गुटनिरपेक्षता की नीति को देखते हुए अमेरिका इसे नजरअंदाज नहीं कर सकता है। साथ ही भारत के लिए यह समय सबसे महत्वपूर्ण है। जब वह अमेरिका से तकनीकी क्षमता प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार जितनी जरूरत भारत को अमेरिका की है उतनी ही जरूरत अमेरिका को भारत की है, क्योंकि दोनों ही देश वैश्विक स्तर पर शांति, स्थिरता, समृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इसलिए दोनों देशों के मध्य द्विपक्षीय सम्बन्धों का प्रासंगिक विकास समय की जरूरत हैं, क्योंकि दोनों देशों का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रहित को प्रधानता देते हुए बहुआयामी सांस्कृतिक एवं आर्थिक साझे पक्षों के मध्य बढ़ावा देना हैं।

मूल शब्द : वैश्वीकरण, राष्ट्रीय हित, द्विपक्षीय सम्बन्ध, लोकतांत्रिक साझेदारी, आर्थिक विकास, शांति एवं समृद्धि, सांस्कृतिक हित।

प्रस्तावना
बदलते वैश्विक परिदृश्य में न केवल भारत को अमेरिका की जरूरत है बल्कि अमेरिका को भी भारत की उतनी ही जरूरत हैं, क्योंकि विश्व शांति, स्थिरता, समृद्धि, न्याय, सहिष्णुता, परमाणु ऊर्जा का रचनात्मक प्रयोग एवं निःशस्त्रीकरण के क्षेत्रों में लोकतांत्रिक सुदृढ़ीकरण के लिए दोनों राष्ट्रों की महत्वपूर्ण भूमिका है।

भारत और अमेरिका दोनों ही विश्व के विशाल लोकतंत्र हैं। अमेरिका को जहाँ विश्व का सबसे सुदृढ़ लोकतंत्र माना जाता है तो भारत विश्व का सबसे विशाल क्रियाशील लोकतंत्र है। नागरिक अधिकार तथा स्वतंत्रताओं के प्रति प्रतिबद्धता, विविधतापूर्ण तथा खुली संस्कृति, पंथनिरपेक्षता तथा खुला नागरिक समाज आदि विशेषताएँ दोनों समाजों में समान रूप से पायी जाती हैं। स्वतंत्र तथा निष्पक्ष चुनाव, राजनीतिक दलों में खुली प्रतिस्पर्धा, वयस्क मताधिकार तथा स्वतंत्र नयायपालिका दोनों की राजनीतिक व्यवस्थाओं की समान विशेषताएँ है। भारत और अमेरिका दोनों ही उदारवादी लोकतंत्र को लोकतंत्र का सबसे आदर्श स्वरूप मानते हैं। भारत में लोकतांत्रिक संस्थाओं तथा लोकतांत्रिक मूल्यों एवं परम्पराओं का तीव्रता के साथ विकास हुआ है। भारत और अमेरिका दोनों की राजनीतिक व्यवस्थाओं तथा समाजों में उपर्युक्त समानताएँ सहयोग की व्यापक भूमिका तैयार करती हैं। राजनीतिक क्षेत्र में समान दृष्टिकोण रखने वाले राष्ट्र आर्थिक तथा सामरिक क्षेत्र में अधिक दृढ़ता के साथ काम कर सकते हैं। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि यह सदैव ही सही होता है क्योंकि भारत और सोवियत संघ भिन्न–भिन्न राजनीतिक व्यवस्थाओं के उपरान्त भी विश्वसनीय मित्र रहे हैं जबकि अमेरिका के साथ हमारे सम्बन्ध अमैत्रीपूर्ण रहे हैं। भारत तथा अमेरिका ने विश्व में लोकतंत्र के प्रोत्साहन के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किये हैं जिसके तहत् लोकतांत्रिक संस्थाओं को मजबूत बनाने और इनसे जुड़े मानव संसाधनों को विकसित करने के लिए दोनों देशों या किसी तीसरे देश में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चलाए जाएंगे। अमेरिका की पहल पर स्थापित ''संयुक्त राष्ट्र लोकतंत्र कोष'' में भारत ने एक करोड़ डॉलर देने की घोषणा की है, अतः स्पष्ट है कि भारत और अमेरिका के मध्य राजनीतिक क्षेत्र में सहयोग करने की व्यापक सम्भावनाएँ मौजूद हैं। परन्तु आवश्यकता इस बात की है कि अमेरिका लोकतंत्र के नाम पर किसी राष्ट्र के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप न करें तथा अपने प्रकार का लोकतंत्र ऊपर से थोपने का प्रयास नहीं करे, क्योंकि भारत कभी भी अमेरिका की इस नीति का समर्थन नहीं कर सकता है।

इस परिवर्तित वैश्विक परिदृश्य में भारत–अमेरिका के मध्य सहयोग की सर्वाधिक व्यापक सम्भावनाएँ आर्थिक तथा व्यापारिक क्षेत्र में है। वर्तमान में अमेरिका भारत का सबसे बड़ा 'व्यापारिक भागीदार' है तथा अमेरिका भारतीय उत्पादों का सबसे बड़ा बाजार है। भारतीय उत्पादों के कुल निर्यात का 5 प्रतिशत निर्यात अमेरिका में ही होता है।

आर्थिक विकास के सम्बन्ध में 2002 से दो तरफा व्यापार पाँच गुणा बढ़कर करीब–करीब 100 बिलियन डॉलर हो गया है। राष्ट्रपति ओबामा और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने व्यापार पाँच गुणा बढ़ाने के लिए आवश्यक कार्यवाइयों में सुगमता प्रदान करने की कोशिश की। दोनों देशों के नेताओं ने स्वीकार किया कि अमेरिका और भारत के व्यवसायों को संपोषणीय, समावेशी तथा रोजगारोन्मुख विकास एवं प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाऐंगे। वैश्विक स्तर पर बदले आर्थिक परिदृश्य में भारत–अमेरिका को कृषि उत्पादों, विनिर्माण, फार्मास्यूटिकल एवं आई.टी. तथा आईटीईएस क्षेत्रों में अपने निर्यात को बढ़ाने की सोच सकता है। इसके अतिरिक्त भारत अमेरिका से कृषि क्षेत्र में फसल के बाद की प्रतिक्रियाओं में सम्बन्धित उन्नत प्रौद्योगिकी एवं कृषि बॉयोटेक आदि का भी लाभ ले सकता है। अन्तरिक्ष क्षेत्र में सहयोग से भी भारत अमेरिका के बीच व्यापार को बढ़ावा मिलेगा तथा भारतीय अन्तरिक्ष क्षेत्र को विकास के अधिक

अवसर प्राप्त होंगे। इस प्रकार स्पष्ट है कि इक्कीसवीं शताब्दी, जिसे आर्थिक सम्बंधों की शताब्दी कहा जा रहा है, में भारत–अमेरिका के मध्य आर्थिक सम्बंधों के प्रगाढ़ होने की व्यापक सम्भावनाएँ हैं। भारत की अर्थव्यवस्था 8 प्रतिशत की वृद्धि दर से विकास कर रही है जिससे निवेश तथा रोजगार के व्यापक अवसर उत्पन्न होने की सम्भावना है। भारत–अमेरिका के साथ मिलकर इक्कीसवीं सदी में वैश्वीकरण से उत्पन्न होने वाले अवसरों का लाभ उठाकर सुदृढ़ अर्थव्यवस्था के रूप में विकसित हो सकता है।

भारत और अमेरिका के मध्य विज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्र में सहयोग की व्यापक सम्भावनाएँ हैं। ''सामरिक साझेदारी के नये कदम'' (एनएसएसपी) के अन्तर्गत दोहरे उपयोग वाली उच्च तकनीक, असैनिक नाभिकीय तथा अन्तरिक्ष सहयोग एवं मिसाइल रक्षा क्षेत्र में सहयोग की बात कही गई है।

अमेरिका ने अभी तक भारत को उच्च तकनीक के निर्यात पर प्रतिबंध लगा रखा है। इसके हटने से भारतीय वैज्ञानिकों को अपनी क्षमताओं के विकास के अधिक अवसर प्राप्त होंगे, क्योंकि विश्व में होने वाले नवीनतम विकास तथा वैज्ञानिक अनुभवों का लाभ मिल सकेगा। भारतीय अन्तरिक्ष कार्यक्रम को भी प्रतिबंध हटने से उच्च तकनीक तथा उत्तम कोटि के कलपुर्जे प्राप्त हो सकेंगे। इसके अतिरिक्त विभिन्न क्षेत्रों में विज्ञान व तकनीकी लाभ का उपयोग किया जा सकेगा। भारतीय सॉफ्टवेयर क्षेत्र को अधिक विस्तृत क्षेत्र विकास के लिए प्राप्त होगा।

भारत–अमेरिका के मध्य परमाणु मुद्दा, कश्मीर समस्या, मानवाधिकार व व्यापार सम्बन्धित समस्याओं के बावजूद शीतयुद्ध के पश्चात् भारत–अमेरिका व्यापार ने कुल मिलाकर नई ऊँचाईयों को छुआ है। यह दर्शाता है कि दोनों देश व्यापार के प्रति सजग हैं। व्यापार सम्बन्ध एवं निवेश सहयोग के लिए भारत व अमेरिका के मध्य काफी अधिक सम्भावनाएँ हैं जबकि उच्च राजनीतिक इच्छाशक्ति एवं नीतिगत पहल की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। दोनों तरफ से काफी हद तक प्रयास किये गये हैं, परन्तु अभी भी क्षमताओं की तुलना में व्यापार कम ही हो पा रहा है। भारत व अमेरिका को अभी काफी दूरी तय करनी है क्योंकि दो दशक के बाद भी भारत का अमेरिका की ओर होने वाले निर्यात में बहुत छोटा ही हिस्सा है। दोनों देशों के मध्य कुल विश्व व्यापार प्रतिशत से भी कम व्यापार होता है। अतः यही कहा जा सकता है कि दोनों देशों के मध्य सहयोग व समन्वय की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। वर्तमान में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा अमेरिका में बसे हुये अप्रवासी भारतीयों को भारत में निवेश के लिए प्रोत्साहन करने एवं अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा की भारत यात्रा के दौरान अमेरिकी बहुराष्ट्रीय निगमों के मुख्य कार्यकारी अधिकारियों का शामिल होना एवं भारत के प्रमुख कम्पनियों के मुख्य कार्यकारी अधिकारियों (सी.ई.ओ.) से वार्ता आदि कदम भारत–अमेरिका व्यापार व निवेश सहयोग को बढ़ावा देने के लिए भविष्य में महत्वपूर्ण कदम साबित होंगे। भारत व अमेरिका के मध्य अगर व्यापार बढ़ता है तो यह दोनों देशों में रोजगार सृजन, सतत् विकास, समावेशी वृद्धि एवं नवाचार को बढ़ावा देगा।

डोनाल्ड ट्रम्प का सत्ता में आगमन एवं भारत–अमेरिका सम्बन्धों का भविष्य

20 जनवरी, 2017 को अमेरिका के 45वें राष्ट्रपति के रूप में रिपब्लिकन पार्टी के उम्मीदवार डोनाल्ड ट्रम्प के सत्ता में काबिज होते ही उनके रुख ने एक नये दौर की शुरूआत कर दी है।

सत्ता में आते ही 'अमेरिका फर्स्ट', संरक्षणवाद एवं नस्लीय भेदभाव की रणनीति से न केवल भारत अपितु सम्पूर्ण विश्व के लिए चर्चा का नया विषय बन गया है, जिसका समूचे विश्व पर प्रभाव पड़ना लाजमी है।

डोनाल्ड ट्रम्प की नीतियों का भारत पर किस तरह का प्रभाव पड़ेगा, इस पर कई तरह के कयास लगाए जा रहे हैं। अतः उम्मीद है कि द्विपक्षीय सम्बन्धों में बढ़ोतरी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के कार्यकाल में भी बनी रहेगी। भारत–अमेरिका के सम्बन्धों का भविष्य उज्ज्वल रहने की आशा है।

संदर्भ

1. अर्चना उपाध्याय, भारतीय विदेश नीति और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष 2005.
2. राजीव सीकरी, चैलेन्जेस एण्ड स्ट्रेटेजी : रिथिंकिंग इण्डियाज फॉरेन पॉलिसी, सेज पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, वर्ष 2009.
3. बी.एम. जैन, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, वर्ष 2016.
4. आर.एस. यादव, भारत की विदेश नीति, पियर्सन पब्लिकेशन, दिल्ली, वर्ष 2013.
5. कांती पी. बाजपेयी एण्ड हर्ष वी. पंत (सं.), इंडियाज फॉरेन पॉलिसी ए रीडर, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, वर्ष 2013.
6. मोहम्मद सामीर हुसैन, इंडो–यूएस स्ट्रेटेजिक रिलेशंस प्रोस्पेक्ट्स एण्ड चैलेंज इन दी ट्वन्टी वन सेन्चुरी, नेहा पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, वर्ष 2014.
7. ग्लोबल पॉलिटिक्स, एंड्रयू हेर्वुड, पालग्रेव पब्लिशर्स, लंदन, वर्ष 2016.
8. मुकुचन्द दुबे, इंडियन फॉरेन पॉलिसी विकास पब्लिशर्स, नई दिल्ली, वर्ष 2017.
9. द हिन्दू समाचार पत्र, 17 जुलाई, 2017.
10. इण्डियन एक्सप्रेस समाचार पत्र, 21 जनवरी, 2017.